अँग्रेज़ी सभी के लिए | पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए कार्यक्रम

चन्द्रा विश्वनाथन

पृष्ठभूमि

सभी के लिए अँग्रेज़ी भाषा का कौशल - यह ईएलएफ लर्निंग सॉल्यूशंस का लक्ष्य था। इस संगठन को हमने ग्रामीण और शहरी बच्चों के बीच मौजूद शैक्षिक विभाजन को दूर करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शुरू किया था। अँग्रेज़ी भाषा से सम्बन्धित अधिकांश कार्यक्रम इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हैं कि अँग्रेज़ी सीखने के लिए सामग्री *कैसे* डिज़ाइन करें? लेकिन हमने इस बात की शुरुआत *क्यों* से की - हम क्यों चाहते हैं कि बच्चे अँग्रेज़ी सीखें? वैसे तो परीक्षा में सफल होना और रोज़गार के बेहतर अवसर मिलना अपने आप में अच्छे कारण हैं, पर बच्चों के लिए अँग्रेज़ी सीखने का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है आत्मविश्वास बढ़ाना। कम आय वाले परिवारों के बहुत सारे बच्चों के साथ काम करने से यह स्पष्ट था कि भले ही यह बच्चे अन्य कौशलों में दक्ष हों, लेकिन यदि वे अँग्रेज़ी में बात नहीं कर सकते तो वे अँग्रेज़ी बोलने वाले बच्चों के सामने हीन महसूस करते हैं।

यदि अँग्रेज़ी की कक्षाओं में कठोर व्याकरण और उच्चारण नियमों को अधिक महत्त्व दिया जाता है तो बच्चे भाषा से और भी ज़्यादा डर जाते हैं। यही कारण है कि पहली पीढ़ी के अधिकांश शिक्षार्थी, अँग्रेज़ी भाषा के कौशल प्राप्त करने में असफल रह जाते हैं। और अगर कुछ बच्चे इन कौशलों को सीख भी लेते हैं तब भी उनमें इतना आत्म-विश्वास नहीं आ पाता कि वे अँग्रेज़ी में साधारण-सी बातचीत भी कर सकें।

पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए अँग्रेज़ी

हमने इस विषय पर शोध शुरू किया कि अँग्रेज़ी अधिगम किस तरीक़े से किया जाए जिससे कि बच्चे इसे सीखने की प्रक्रिया में आत्म-विश्वास का निर्माण कर सकें। हमने अपना पहला प्रयास ग्रामीण तमिलनाडु के अड़तालीस सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के साथ किया। इन कक्षाओं में शिक्षकों ने दो मुख्य सिद्धान्तों का पालन किया – पहला, बच्चों को गलतियाँ करने देना और दूसरा, अँग्रेज़ी बोलने का प्रयास करते समय उन्हें अँग्रेज़ी वाक्यों में अपनी भाषा के शब्दों का प्रयोग करने देना।

हमने ऐसी तकनीकों का विकास करना भी शुरू कर दिया जिनसे बच्चों को अँग्रेज़ी पढ़ना सीखने में आसानी हो, ख़ासकर उनको जो केवल स्कूल में अँग्रेज़ी से रूबरू होते हैं। अँग्रेज़ी जैसी भाषा में, जिसमें अधिकांश शब्द ध्वनि-विज्ञान के नियमों का पालन नहीं करते, ऐसे में बच्चे पढ़ना सीखने की कोशिश करते समय जल्दी निराश हो जाते हैं। वे जल्द ही यह निर्णय ले लेते हैं कि अँग्रेज़ी भाषा के नियम तार्किक नहीं हैं और वे पढ़ना नहीं सीख सकते। स्कूल के कई शिक्षकों के साथ काम करते हुए हमने अँग्रेज़ी पढ़ना सीखने के लिए एक सरल, श्रेणीकृत, ध्वनि-विज्ञान आधारित संरचना विकसित की।

आज ईएलएफ अँग्रेज़ी कार्यक्रम का उपयोग भारत के 115 स्कूलों में किया जा रहा है - इनमें मिज़ोरम के 40 सरकारी स्कूल, असम के 2 और तमिलनाडु के 73 स्कूल शामिल हैं। कार्यक्रम ने बार-बार यह दिखाया है कि जब शिक्षक स्पष्ट

लक्ष्य निर्धारित करते हैं और इस विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं कि सभी बच्चे अँग्रेज़ी सीख सकते हैं तो बेहद अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

क्रियाविधि

आमतौर पर प्रत्येक कक्षा एक ऑडियो या वीडियो पाठ के साथ शुरू होती है। इसके बाद सर्कल-टाइम की गतिविधियाँ और छोटे समूह की गतिविधियाँ होती हैं जो बातचीत को प्रोत्साहित करती हैं। जोड़ी में किए गए प्रश्न-उत्तर अभ्यास यह सुनिश्चित करते हैं कि हर बच्चे को बोलने का मौका मिले। रोल-प्ले और गानों से बच्चों को अँग्रेज़ी के प्रति अपना डर दूर करने में मदद मिलती है। चार महीने की छोटी अवधि में हमने पाया कि कम से कम 51% बच्चे सामान्य बातचीत सम्बन्धी प्रश्नों का जवाब अँग्रेज़ी में दे पा रहे थे।

हमने पढ़ने के कौशल को आठ सरल स्तरों में विभाजित किया। अक्षर की ध्वनियों के साथ शुरू करते हुए हम एक-एक करके शब्दों, वाक्यों, अनुच्छेदों और कहानियों की ओर बढ़े। हर स्तर पर कुछ नई ध्वनियों, मिश्रणों और शब्दों को पेश किया गया। प्रत्येक स्तर पर सामग्री का सावधानीपूर्वक श्रेणीकरण किया गया ताकि बच्चे के सामने केवल वही शब्द आएँ जिन्हें वह पहले से सीखी गई ध्वनियों की मदद से डीकोड (decode) कर सके। प्रत्येक चरण में प्रस्तुत कुछ साइट वर्ड्स (sight words) के कारण बच्चे वाक्य और अनुच्छेद पढ़ने में तेज़ी से प्रगति कर सके।

इस लेख में हम अपनी इस यात्रा से प्राप्त कुछ सीखों को साझा कर रहे हैं। साथ ही यह भी बताने का प्रयास है कि शिक्षक इन विचारों को अपनी अँग्रेज़ी की कक्षा में कैसे उपयोग में ला सकते हैं।

अँग्रेज़ी बोलने की कक्षा

बोलने से पहले सुनना

इससे पहले कि हम बच्चों से कुछ बोलने के लिए कहें, शिक्षिका को उन्हें वह करके दिखाना चाहिए जिसकी अपेक्षा उन्हें बच्चों से है। हम अपनी कक्षाओं में इंटरैक्टिव वीडियो की सहायता से ऐसा करते हैं, लेकिन शिक्षक *शो एंड टेल* में मदद करने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरणों या सरल पोस्टरों का उपयोग भी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम चाहते हैं कि बच्चे कक्षा में वस्तुओं के बारे में एक सरल-सी बातचीत का अभ्यास करें तो शिक्षिका इस तरह से शुरू करती हैं : *What is this? This is a pen. What is that? That is a fan.*

वे वस्तुओं की ओर इशारा करते हुए सवाल पूछती हैं। वे उन वस्तुओं का चयन करती हैं जिनका अँग्रेज़ी शब्द बच्चे स्वाभाविक रूप से जानते हैं। मिसाल के तौर पर *फैन* और *टेबल* जैसे शब्द बच्चों की शब्दावली में इतनी गहराई से समाए हुए हैं कि वेल्लोर के एक सरकारी स्कूल में बच्चों ने ज़ोर देकर कहा कि यह तो तमिल शब्द हैं और उन्हें इनके अँग्रेज़ी शब्दों की जानकारी नहीं है!

इस गतिविधि के दौरान शिक्षिका बच्चों से जवाब देने की अपेक्षा नहीं करतीं - वे ख़ुद सवाल पूछती हैं और जवाब देती हैं तथा बच्चे सुनते हैं। हम शिक्षकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि वे बच्चों को समझाने के प्रयास में, प्रत्येक शब्द का मातृभाषा में अनुवाद न करें। इस प्रकार बिना अनुवाद किए, शिक्षकगण चित्रों और चेहरे के हाव-भाव से अभिव्यक्ति करके बच्चों को यह समझने में मदद करते हैं कि वे क्या कह रहे हैं।

सर्कल-टाईम के अभ्यास

शिक्षक की बात सुनने के बाद बच्चे सर्कल-टाईम में प्रश्नों और उत्तरों का अभ्यास करने के लिए तैयार हो जाते हैं। पहला बच्चा पड़ोसी बच्चे से एक सवाल पूछता है। वह बच्चा उसका उत्तर देने के बाद अपने पास बैठे हुए दूसरे बच्चे से प्रश्न पूछता है, फिर अगले बच्चे की बारी आती है। इस तरह बारी-बारी प्रत्येक बच्चे को बोलने का मौका दिया जाता है। इस बिन्दु पर गलतियों को सुधारा नहीं जाता है। यदि बच्चे संकोच करते हैं तो शिक्षक दूसरे बच्चे के साथ रोल-प्ले करते हैं और फिर से बातचीत करके दिखाते हैं।

छोटे समूह में अभ्यास

शिक्षक 4-5 बच्चों के समूह बनाते हैं ताकि वे सीखी हुई सरल बातचीत का अभ्यास करें। छोटे समूहों में बच्चों को इस बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होती कि कोई वयस्क उनका निरीक्षण कर रहा है; वे बोलने की कोशिश कर सकते हैं, हँस सकते हैं और मज़े कर सकते हैं। धीरे-धीरे शिक्षक

बच्चों की आवाज़ों की गूँज के अभ्यस्त हो जाते हैं - आख़िर अँग्रेज़ी बोलने की कक्षा शान्त कैसे रह सकती है!

चित्रों का वर्णन करना

जॉन होल्ट का कहना है कि जब बच्चों से *कुछ बोलने* के लिए कहा जाता है तो वे केवल तभी जवाब दे सकते हैं जब उनके पास बोलने के लिए कुछ हो। अगर हम शुरुआत में ही बच्चों से किसी घटना का वर्णन करने या किसी विषय पर अपनी राय देने के लिए कहें तो उन्हें अपने विचारों को व्यवस्थित करने और ख़ुद को अभिव्यक्त करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ सकती है।

तस्वीरें बातचीत की शुरुआत करने का बहुत अच्छा साधन हैं। सवाल पूछने और देखी हुई चीज़ का वर्णन करने में बच्चों की मदद करने के लिए हम चित्रों का उपयोग करते हैं। यदि बच्चे अपने आप बोलने के लिए तैयार न हों तो शिक्षक सरल सवाल पूछकर उनकी मदद कर सकते हैं, जैसे *Who is in the picture? Where are they? What are they doing?*

अगर हम कक्षा में उपयोग किए जाने वाले चित्रों को बच्चे के परिवेश से ही लें तो बहुत अच्छा होगा। बच्चे के पर्यावरण से उनकी परिचित वस्तुओं और दृश्यों का उपयोग करने से बच्चों को अँग्रेज़ी इतनी अपरिचित नहीं लगती बल्कि अपनी-सी लगती है।

अनुक्रमण और कहानी सुनाना

कहानी सुनाने से अनुक्रमण कौशल का निर्माण होता है जो सम्प्रेषण के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक बच्चे को एक कहानी-कार्ड दिया जाता है और वह उस चित्र के बारे में एक या दो वाक्य बताने की कोशिश करता है। वे सीखते हैं कि एक समूह के रूप में किसी कहानी को एक साथ कैसे सुनाया जाए।

कैसे-करें सम्बन्धित सरल वीडियो, बच्चों को चरण-दर-चरण निर्देश बनाने में मदद करने के प्रभावी तरीक़े हैं। उदाहरण के लिए 'छड़ी वाली कठपुतलियाँ (स्टिक पपेट) कैसे बनाएँ' विषय पर वीडियो दिखाते समय बच्चों को साथ-साथ बोलने के लिए इस तरह से प्रोत्साहित किया जाता है :

चरण 1: Take a chart paper.

चरण 2: Draw the picture of a dog on it.

चरण 3: Cut out the picture.

चरण 4: Paste it on an ice-cream stick.

चरण 5: Your stick puppet is ready!

रोल-प्ले

आत्म-विश्वास पैदा करने के लिए दर्शकों के सामने बोलने से बेहतर तरीक़ा और कोई नहीं है। बच्चे रोल-प्ले के लिए बहुत सरल-से संवाद याद करते हैं। समूहों में अभ्यास करने के बाद बच्चे कक्षा के सामने रोल-प्ले करते हैं। यह रोल-प्ले छोटे होने चाहिए और उनमें दोहराव वाले सरल संवाद होने चाहिए, जिन्हें याद रखना आसान हो। यहाँ हमें रंगमंच की सामग्री या वेशभूषा या निपुणता के साथ संवाद बोलने पर ध्यान नहीं देना है - सिर्फ़ आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए प्रदर्शन को महत्व देना है।

धाराप्रवाह अँग्रेज़ी पढ़ना

हालाँकि बोलने से आत्म-विश्वास बहुत बढ़ता है, लेकिन बच्चों को धाराप्रवाह रूप से अँग्रेज़ी पढ़ना सीखना भी ज़रूरी है। इससे उन्हें न केवल स्कूल में मदद मिलती है बल्कि वे स्वतंत्र रूप से उन कहानियों और पुस्तकों को भी पढ़ पाते हैं जो उन्हें पसन्द हैं और साथ ही उनकी समझ और शब्दावली-कौशल का निर्माण भी होता है।

ध्वनि विज्ञान के कई कार्यक्रम वर्ण की ध्वनियों और सम्मिश्रण के बारे में सिखाते हैं। लेकिन उनमें से बहुत कम ऐसे हैं जो बच्चे को तीन-अक्षर के शब्दों को पढ़ने के आगे ले जाते हैं। जब बच्चों को लम्बे शब्दों और वाक्यों को पढ़ना सीखना होता है तो ध्वनि विज्ञान के दृष्टिकोण को छोड़ दिया जाता है। फिर उन्हें पाठ्य को देखकर पढ़ना और वर्तनी याद रखना सिखाया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप कई बच्चे धाराप्रवाह रूप से नहीं पढ़ पाते। अपने कार्यक्रम में हमने ध्वनि-विज्ञान दृष्टिकोण का उपयोग न केवल अक्षरों से छोटे शब्दों को पढ़ने के लिए किया, बल्कि उसकी सहायता से वाक्य, छोटे अनुच्छेद और कहानियाँ पढ़ने के लिए भी किया।

जिस तरह बच्चों को अँग्रेज़ी बोलना सिखाते वक़्त उनका आत्म-विश्वास बढ़ाने की ज़रूरत होती है, वैसे ही अँग्रेज़ी पढ़ने के लिए भी उन्हें आत्म-विश्वास की ज़रूरत होती है। ऐसी कई तकनीकें हैं जो इस आत्म-विश्वास के निर्माण में मदद करती हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

खेलो और पढ़ो

शब्दों को पढ़ने में बच्चों की मदद करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है खेल। शिक्षक सरल *मेमोरी मैच* और *बिंगो कार्ड* गेम बनाने के लिए सरल चित्र और शब्द-कार्ड बना सकते हैं जिन्हें बच्चे बार-बार खेलना पसन्द करते हैं।

शब्द बिंगो
शिक्षक शब्द-ग्रिड बनाते हैं और बच्चों से कहते हैं कि वे दिखाए गए चित्रों के अनुरूप शब्दों को काटते चलें। उन्हें हर पंक्ति/स्तम्भ पूरा करने के लिए अंक दिए जाते हैं।

मेमोरी मैच
बच्चे छोटे समूहों में खेलते हुए चित्रों और शब्दों के जोड़े को ढूँढ़ते हैं।

ईएलएफ सेन्टेंस बिल्डर एक फ्लिप-बुक है जो बच्चों को शब्दों को पढ़ते हुए, वाक्यों को पढ़ने तक ले जाने में मदद करता है। शिक्षक एक पुराने कैलेंडर या स्पाइरल नोटपैड का उपयोग करके अपनी आवश्यकतानुसार यह फ्लिप-बुक बना सकते हैं। बच्चे वाक्य की शुरुआत या अन्त को बदलने के लिए बाएँ या दाएँ आधे भाग को फ्लिप कर सकते हैं और जो नया वाक्य बनता है उसे पढ़ सकते हैं। यह गतिविधि समूहों के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से भी की जा सकती है।

दोहराना, दोहराना, दोहराना

दोहराव वाले पाठ्य शुरुआती-पाठकों को अधिक पढ़ने का आत्म-विश्वास देते हैं।

She likes to jump.
She likes to jump and skip.
She likes to jump and skip in the rain.
She likes to jump and skip in the rain all day.

विस्तारित वाक्य जो पढ़ने को आसान बनाते हैं

वाक्य का विस्तार करें

सरल कार्डों का उपयोग करके बच्चों को वाक्य बनाने और पढ़ने में मदद की गई

इसे सरल रखें

शुरुआती-पाठकों को डिकोडेबल शब्दों के साथ सरल पाठ्यों की आवश्यकता होती है। वाक्य छोटे होने चाहिए; फ़ॉन्ट बड़ा होना चाहिए और शब्दों के बीच बहुत अधिक खाली स्थान होना चाहिए।

शुरुआती-पाठकों के लिए उपयुक्त	शुरुआती-पाठकों के लिए अनुपयुक्त
Meera gets a new pen. The pen is red. She puts it in her bag. Meera likes her new pen.	Meera buys a new pen from the departmental store. The pen is shiny and smooth and has a golden nib. Her mother asks Meera to keep it inside her pencil box and promise her that she will keep it safe.

कक्षा के बाहर भी अँग्रेज़ी का प्रयोग

हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि बच्चे कक्षा के बाहर भी अँग्रेज़ी का उपयोग करें? जिन स्कूलों में हमने काम किया है, वहाँ हमने *वॉक 'एन' टॉक* कार्यक्रम शुरू किया जिसका उद्देश्य था अँग्रेज़ी को कक्षा से बाहर और बच्चे के घर में ले जाया जाए। हम चाहते थे कि जब बच्चे स्कूल से घर वापस जाएँ तो अँग्रेज़ी का उपयोग करें। लेकिन जिन समुदायों में कोई भी अँग्रेज़ी नहीं जानता है, वहाँ यह कैसे सम्भव हो पाएगा?

वॉक 'एन' टॉक कार्यक्रम में, जब बच्चे शाम को स्कूल से घर जाते थे तो वे समूह बनाकर अपने अड़ोस-पड़ोस में घूमते और वयस्कों से अँग्रेज़ी में सवाल पूछते। बच्चे प्रश्न का अनुवाद तमिल में करते और अपने माता-पिता, दादा-दादी और अन्य वयस्कों को यह सिखाते कि अँग्रेज़ी में कैसे जवाब दें। जब बच्चों ने जितनी बहुत भी अँग्रेज़ी सीखी थी वह वयस्कों को सिखाई तो पूरे समुदाय को उनपर गर्व हुआ और इससे उनका आत्म-विश्वास बढ़ा।

हर उपलब्धि का जश्न मनाना

यदि अँग्रेज़ी सीखने का लक्ष्य है आत्म-विश्वास पैदा करना, तो बच्चों की उपलब्धियों का जश्न हर कदम पर मनाया जाना चाहिए। आमतौर पर, प्रत्येक कक्षा में केवल अव्वल आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाता है या सराहा जाता है। लेकिन अगर हम चाहते हैं कि हर बच्चा अँग्रेज़ी सीखे तो हमें *प्रगति* का जश्न मनाना चाहिए, न कि *प्रवीणता* का।

प्रत्येक सत्र के अन्त में हम बच्चों के लिए एक *कौशल-मेला* आयोजित करते हैं। पूरे स्कूल में उत्सव का माहौल होता है।

स्कूल में *अक्षर स्टॉल, शब्द स्टॉल, वाक्य स्टॉल* और *चित्र स्टॉल* लगाए जाते हैं। बच्चे अपने स्तर का कोई भी स्टॉल चुन सकते हैं और उस स्टॉल के कार्ड पढ़ने की कोशिश कर सकते हैं। वे एक चित्र चुन सकते हैं और उसके बारे में सवालों के जवाब दे सकते हैं। यदि वे अधिकांश प्रश्नों का सही उत्तर देते हैं तो उन्हें अपनी डायरी के लिए एक स्टिकर या कार्ड मिलता है। कुछ स्कूलों में माता-पिता को अपने बच्चों की प्रगति देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। हर उपलब्धि का जश्न मनाया जाता है, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो।

इस बात पर केवल विश्वास करना ही काफ़ी नहीं है कि हर बच्चा अँग्रेज़ी सीख सकता है, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो; यह भी ज़रूरी है कि हम बच्चों को ख़ुद पर विश्वास करना भी सिखाएँ। जब हम बच्चों में कौशलों के साथ-साथ उनके आत्म-विश्वास का निर्माण भी करते हैं तो हम ऐसी नई पीढ़ी के बच्चों का निर्माण करते हैं जिनमें, जो कुछ भी वे चाहते हैं उसे हासिल करने का आत्म-विश्वास होता है।

चन्द्रा विश्वनाथन ईएलएफ लर्निंग सॉल्यूशंस की संस्थापक निदेशक हैं। इस संगठन का लक्ष्य है पूरे भारत में बच्चों, युवाओं और वयस्कों के लिए अँग्रेज़ी भाषा-कौशल सुनिश्चित करना, विशेष रूप से अँग्रेज़ी सीखने वाले पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए। चन्द्रा और ईएलएफ की अँग्रेज़ी टीम ने अँग्रेज़ी सीखने के लिए कई नवाचारी शिक्षण सामग्रियाँ विकसित की हैं जिनका उपयोग सौ से अधिक स्कूलों में शिक्षकों और बच्चों द्वारा किया जा रहा है। शिक्षा के ग़ैर-लाभकारी संगठन एआईडी इंडिया का हिस्सा होने के नाते चन्द्रा को सरकारी स्कूलों में शैक्षिक अनुसन्धान, पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण और कार्यान्वयन कार्यक्रमों में 20 से अधिक वर्षों का अनुभव है। सर्वशिक्षा अभियान (SSA), तमिलनाडु सरकार, स्कूलों और गैर-सरकारी संगठनों के लिए, प्राथमिक शिक्षा की रिसोर्स पर्सन और प्रशिक्षिका के रूप में चन्द्रा ने, बच्चों में अधिगम परिणामों में सुधार लाने की दिशा में, सरकारी स्कूलों के 10,000 से अधिक शिक्षकों के साथ काम किया है। उनसे chandra.aid@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल